❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।
अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 सितम्बर, 2017 से रविवार 1 अक्तूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

और अब लद्दाख निशाने पर

देश से बौद्धों का सफाया हो जाएगा और लद्दाख मुस्लिम देश हो जायेगा।

किसी समुदाय को जब अपना अस्तित्व बचाना होता है तो वह उसके लिए शांत रहने का समय नहीं होता। शायद कुछ इसी वजह से आज बुद्ध के अहिंसा-शांति के उपदेशों के रास्ते को छोड़कर आक्रमण की नीति अपनाने को मजबूर हो रहा बौद्ध समुदाय। मोक्ष की साधना आखिर शांतिमय वातावरण चाहती है। किन्तु अपनी परम्परा अपनी संस्कृति और समुदाय को बचाने के कई बार अन्य रास्ते भी तलाश करने पड़ते है। शायद इसी कारण पूरे बर्मा के बाद आज लद्दाख के बौद्ध उग्र हो रहे हैं। उन्होंने साफ कहा कि अब यदि हमें इंसाफ नहीं मिला तो

इन दिनों जब भारत रोहिंग्या मुस्लिमों को लेकर टकराव का मैदान बना है। इसी बीच कुछ घटना ऐसी भी घट रही हैं जिन पर सोचना और आवाज उठाना जरूरी बन गया है। हाल ही में लद्दाख में

...इन दिनों जब भारत रोहिंग्या मुस्लिमों को लेकर टकराव का मैदान बना है। इसी बीच कुछ घटना ऐसी भी घट रही हैं जिन पर सोचना और आवाज उठाना जरूरी बन गया है। हाल ही में लद्दाख में बौद्ध लड़कियां लव जिहाद का शिकार बनायी जा रही हैं ताकि लद्दाख को भी मुस्लिम बहुल क्षेत्र बनाया जा सके।...

बौद्ध लड़कियां लव जिहाद का शिकार बनायी जा रही हैं ताकि लद्दाख को भी मुस्लिम बहुल क्षेत्र बनाया जा सके।

– शेष पृष्ठ 3 पर

सम्पादकीय

कोई गरीब या विधवा ही डायन क्यों?

यह है 21वीं सदी का डिजिटल इंडिया। अग्नि-5 और खुद का नेवीगेशन सिस्टम स्थापित करने वाला भारत। कौन कहता है यहाँ ज्ञान की कमी है। अनपढ़ से अनपढ़ और पढ़े लिखे जब एक कतार में खड़े में हों तो समझ लेना या तो मतदान है या फिर अन्ध विश्वास। हमने सुना था समृद्धि अंध विश्वास भी लेकर आती है। लेकिन गरीबी अन्धविश्वास छोड़ना नहीं चाहती हम सब की रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ न कुछ सुख दु:ख जरूर होता है। हम इसके बारे में सोचना छोड़ दें तो शायद ही कुछ बदले किसी भी अन्धविश्वास से अच्छी किस्मत हमेशा नहीं आती। इन सबके बाद भी यदि हम कभी न खत्म होने वाले सुख और शांति की तलाश में किसी भोपे या बाबा की शरण में जा रहे हैं तो ध्यान रखना वहां अच्छी किस्मत ही नहीं बल्कि मौत भी मिल सकती है।

...आधुनिक भारत में आज भी रोग दूर करने के मध्य कालीन हिंसात्मक तरीके और अन्धविश्वास का साम्राज्य कई जगह ज्यों का त्यों खड़ा है। निश्चित ही यह खबर समाज को पीछे धकेलने वाले, न जाने कितनी महिलाओं का जीवन बर्बाद कर देने वाले भोपों अर्थात् बाबाओं के सच पर आधारित है। ये भोपे दावा करते हैं कि उनके पास हर दुख-दर्द की दवा है। चाहे बीमारी हो या डायन का साया। हैरानी तो यह है डायन कौन है, यह भी ये खुद तय कर देते हैं। इन्हीं के सुनाए फरमानों ने भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ व राजसमंद जिलों में पिछले कुछ सालों में 105 महिलाओं को डायन बना दिया। 22 महिलाओं को गांव से बाहर निकाल दिया गया। आठ को पीट-पीटकर मार डाला गया।......

इस आस्था और अंधविश्वास के बीच की बारीक लकीर पार करनी हो तो राजस्थान के भोपे (बाबाओं) के डेरे में आकर देखें। मैं खुद दैनिक भास्कर की यह रिपोर्ट देखकर सन्न रह गया कि आधुनिक भारत में आज भी रोग दूर करने के मध्य कालीन हिंसात्मक तरीके और अन्धविश्वास का साम्राज्य कई जगह ज्यों का त्यों खड़ा है। निश्चित ही यह खबर समाज को पीछे धकेलने वाले, न जाने कितनी महिलाओं का जीवन बर्बाद कर देने वाले भोपों अर्थात् बाबाओं के सच पर आधारित है। ये भोपे दावा करते हैं कि उनके पास हर दुख-दर्द की दवा है। चाहे बीमारी हो या डायन का साया। हैरानी तो यह है डायन कौन है, यह भी ये खुद तय कर देते हैं। इन्हीं के सुनाए फरमानों ने भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ व राजसमंद जिलों

– शेष पृष्ठ 3 पर

सार्व. सभा के अधिकारियों ने किया निर्माणाधीन महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन देवघर का निरीक्षण

गत दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत गुरुकुल बैद्यनाथधाम, जिला देवघर (झारखण्ड) में निर्माणाधीन महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन के निरीक्षण के लिए पहुंचे। ज्ञातव्य है कि यह विद्या निकेतन प्रचीन गुरुकुल मे ही पृथक से गुरुकुल के भू-भाग पर ही बनाया जा रहा है। इस विद्यालय का शुभारम्भ इस वर्ष के अन्त तक किया जाएगा। इस अवसर पर वहां निर्माण कार्य में सेवारत श्री अनिल अरोड़ा, श्री मनोज असवाल जी।

इस अवसर पर अधिकारीगण झारखण्ड सभा के प्रधान श्री भारत भूषण त्रिपाठी जी से भी मिले और गुरुकुल की स्थिति के विषय में चर्चा की। श्री त्रिपाठी जी ने अपनी सेवानिवृत्ति के उपरान्त गुरुकुल का कार्यभार सम्भाला है। उन्होंने बताया कि गुरुकुल बहुत अच्छा चल रहा है। सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने गुरुकुल के उत्थान के लिए हर सम्भव सहयोग उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

वेद-स्वाध्याय

अद्‌भुत मित्र

देवो देवानामसि मित्रो अद्‌भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम वत सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।। -ऋ. 1/94/13
ऋषिः **कुत्स आङ्गिरसः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **विराडजगती**।।

शब्दार्थ-अग्ने = हे परमेश्वर! **देवानां देवः असि** = तू देवों का देव है **अद्‌भुतः मित्रः** = तू अद्‌भुत मित्र है! **वसूनां वसुः असि**= तू सब वसुओं का वसु, धनों का धन है।! **अध्वरे चारुः**= यज्ञ में ते शोभायमान है, अतः हम चाहते हैं कि **वयम्**= हम **तव** = तेरी **सप्रथस्तमे शर्मन्**= विस्तीर्णतम शरण में **स्याम**= होवें और **तव सख्ये**= तेरे सख्य में **मा रिषाम**= हम नष्ट न होवें।

विनय-हे प्रभो! हम चाहते हैं कि हम तेरी विस्तीर्णतम शरण में रहने लगें। तेरी शरण इतनी फैली हुई है कि उसमें आकर मनुष्य किसी भी देश में व किसी भी काल में दुःख नहीं पा सकता। संसार की और किसी भी वस्तु का आश्रय ऐसा नहीं है । सब सुख, सब आश्रय और सब शरण इसके सामने अत्यन्त तुच्छ है, क्योंकि संसार के सब देवों के भी देव तुम हो। सब देवों में देवत्व तुम्हारे द्वारा ही आया है। तुम्हारे आश्रय के बिना इन अग्नि आदि महान् दीखने वाले देवों में कुछ नहीं है। इन सब बसाने वालों के बसाने वाले तुम हो। सब धनों के धन तुम हो। तुम्हें पाकर और सब धन बेकार हो जाते हैं। सब पुण्य यज्ञों के अन्दर तुम ही शोभायमान होते हो। यज्ञों का सौन्दर्य तुम हो। तुम्हारे बिना कोई यज्ञ, यज्ञ नहीं रह सकता और तुम अद्‌भुत मित्र हो। अहो! ऐसा मित्र और कौन हो सकता है? यदि सर्वशक्तिमान और तीनों कालों का जानने वाला मित्र किसी को मिल सके तो उसे और क्या चाहिए! इसीलिए अब हम तेरे सख्य में (मैत्री में) आना चाहत हैं। हमने तुझे देवों का देव, वसुओं का वसु समझ लिया है, अतः हमें अब किसी अन्य देव व वसु की प्राप्ति की चाहना नहीं रही है, हमने तुझे ''सब यज्ञों के सौन्दर्य'' रूप में देख लिया है, अतः हमें अब किन्हीं कर्मकाण्ड-मय यज्ञों के करने में आर्कषण नहीं रहा है, अब तो तेरे निरन्तर ध्यान का यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ लगता है। हमने तुझे अद्‌भुत मित्र देखा है- अहो, ऐसा अद्‌भुत! ऐसा विलक्षण!! तुझ सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ मित्र की अद्‌भुतता दूसरे न जानने वाले को कैसे समझाई जाए? अहो, तुम कैसी विलक्षणता से हम सबके साथ आठों प्रहर, हर घड़ी, हर पल परम मित्रता निभा रहे हो! तुम जैसे अद्‌भुत मित्र को देखकर अब हमें और किसी की मैत्री की आवश्यकता नहीं है। अरे, वे अनजान लोग हैं जो संसार में और किसी की मैत्री पाने के लिए टक्करें मारते फिरते हैं। तेरी विस्तृत शरण में तो और सब शरण समा जाती हैं, अतः हे स्वामिन्! हमें तो अपनी मैत्री प्रदान कर, तब हमें कोई भय न रह सकेगा! हे प्रभो! तू हमें अपनी अनन्त, अपार शरण में जगह दे दे, तब हमें किसी विनाश का भय न रह सकेगा।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज के वे जिन्दा बलिदानी

....अतीत की घटनाएँ इतनी हृदय विदारक रही हैं कि सुनकर खुशनुमा माहौल में भी आँखे नम हो जाया करती हैं। ....आइये चलते एक सदी पीछे जब अगस्त 1921 में केरल के मालाबार में मोपला मुस्लिमों ने स्थानीय हिन्दुओं पर हमला कर दिया। मजहबी उन्माद में सैंकड़ों हिन्दुओं की नृशंस हत्या कर दी गई। उन्हें इस्लाम अपनाने या मौत चुनने का विकल्प दिया गया। हजारों का मत-मतांतरण किया गया, गैर-मुस्लिम महिलाओं का अपहरण कर बलात्कार किया गया, संपत्ति लूटी और नष्ट कर दी गई।....

राजनीतिक टकराव और मजहबी विस्तार की भेंट चढ़े केरल प्रान्त में आज जो कुछ भी घट रहा है, दरअसल इसकी पटकथा लगभग एक सदी पहले लिखनी शुरू हो गयी थी। लाशें गिरती गयीं, धर्म खंडित होता गया, 1947 में देश के लोगों ने राजनैतिक स्वतंत्रता का सूरज तो देखा पर धार्मिक स्वतंत्रता के माहौल में खुली साँस 'न' ला पाए जिस कारण आज भारत के दक्षिण स्थित केरल आज किस तरह जेहादी विषबेल की जकड़ में फंस चुका है, वह हाल ही की एक घटना से पुनः रेखांकित हो गया। यहां के कासरगोड़ जिले में कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव में एक सड़क का नाम ''गाजा स्ट्रीट'' रखा गया है। भारत के जिस भू-भाग को उसकी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के लिए ''भगवान की धरती'' की संज्ञा दी गई, आज वहां मजहबी हिंसा अपने उत्कर्ष पर है। हमेशा से एक दूसरे के धुर विरोधी राजनैतिक दल और मीडिया सच से दूर ले जाती रहा जिसका नतीजा आज हम सबके सामने है और ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर सच क्या है और क्या इसका अतीत से कुछ लेना है?

दरअसल अतीत की घटनाएँ इतनी हृदय विदारक रही हैं कि सुनकर खुशनुमा माहौल में भी आँखे नम हो जाया करती हैं।

आइये चलते एक सदी पीछे जब अगस्त 1921 में केरल के मालाबार में मोपला मुस्लिमों ने स्थानीय हिन्दुओं पर हमला कर दिया। मजहबी उन्माद में सैंकड़ों हिन्दुओं की नृशंस हत्या कर दी गई। उन्हें इस्लाम अपनाने या मौत चुनने का विकल्प दिया गया। हजारों का मत-मतांतरण किया गया, गैर-मुस्लिम महिलाओं का अपहरण कर बलात्कार किया गया, संपत्ति लूटी और नष्ट कर दी गई।

हिन्दुओं पर जो अत्याचार हो रहा था काफी समय तक उसकी खबरें पंजाब में प्रकाशित नहीं हुई। हाँ बम्बई के समाचार पत्रों में कुछ खबर छापी जा रही थीं। लेकिन उस समय का तथाकथित सेकुलिरज्म लोगों को यह कहकर गुमराह कर रहा था कि यह काम हिन्दू और मुस्लिमों के बीच परस्पर मेलजोल की खाई खोदने के लिए किया जा रहा है। इस मजहबी तांडव की खबर बम्बई से दीवान राधाकृष्ण जी ने समाचारपत्रों को इकट्ठा कर पंजाब रवाना की तो यहाँ लोगों के हृदय दहल उठे।

16 अक्तूबर 1921 शिमला में आर्य समाज का अधिवेशन हुआ और अधिवेशन में सभी के द्वारा नम आँखों से एक प्रस्ताव पास किया गया जिसका उद्देश्य था कि केरल के इलाके मालाबार में मुसलमानों द्वारा जो अत्याचार करके हिन्दुओं को जबरन मुस्लिम बनाया गया उन्हें फिर शुद्ध करके उनके मूल धर्म में वापस लाया जाये। प्रस्ताव के अनुसार यह अपील भी प्रकाशित की गयी कि जितना शीघ्र हो सके कि पीड़ितों का उचित खर्च भी उठाया जाये ताकि कोई हिन्दू जबरन अपने धर्म से पतित न किया जाये। इसका दूसरा उद्देश्य यह था कि गृहविहीन, दीनहीन, असहाय बनाये गये लोगों को सहायता देकर जीवित रखा जाये और भविष्य में ऐसे कारण न उपजे। इसके लिए मालाबार की हिन्दू सोसाइटी को स्थिर किया जाये।

हाय रे भारत के दुर्भाग्य, तुझे अपने ही देश अपनी संतान की दुर्दशा पर इस कदर भी रोना पड़ेगा। यह सोचकर तत्कालीन आर्य समाज के पदाधिकारियों ने कार्य करना आरम्भ किया पंडित ऋषिराम जी को 1 नवम्बर को मालाबार भेजा गया अक्तूबर मास में 371 रुपये दान प्राप्त हुआ। अतः उन रुपयों और अपने बुलंद हौसलौं के बल पर आर्य समाज के वीर सिपाही मोपला विचाधारा से लड़ने निकल चले।

नवम्बर मास तक वहां हिन्दुओं को एकत्र करने का कार्य जारी रहा। लेकिन इसमें एक अच्छी खबर यह थी कि आर्य समाज से जुड़े सभी लोगों ने केरल के पीड़ित समाज के लिए अपने खर्चो में कटौती कर 1731 रुपये और भेज दिए। उस समय लाहौर से प्रकाशित अखबार ''प्रताप'' ने लोगों के मन को हिला डाला और आर्य समाज के इस कार्य के लिए प्रताप अखबार ने जो अलख पूरे पंजाब प्रान्त में जगाई वह अपने में भारतीय पत्रकारिता की सुन्दर मिसाल है। 29 नवम्बर को आर्य समाज ने पूरे तीव्र वेग से लोगों को जोड़ना आरम्भ कर दिया। लेकिन लोग मोपला विद्रोहियों से इस कदर डरे हुए थे कि राहत कैम्पों में आने से कतरा रहे थे तब ऋषिराज जी ने वहां की स्थानीय भाषा में पत्रक प्रकाशित करवाए। अनेक जातीय संगठनों की सभाओं में जाकर व्याख्यान दिए। लोगों को समझाया गया कि शुद्धि द्वारा उनको वापस अपने मूल धर्म में आने का द्वार खुला है।

फरवरी 1922 में आर्यगजट में संपादक लाला खुशहालचंद जी, पंडित मस्ताना जी, पंजाब से मालाबार रवाना हुए। आर्य महानुभावों के इस कार्य से उत्साहित आर्यजन लाहौर, बलूचिस्तान समेत अनेक इलाकों में केरल के हालात पर सभाएं आयोजित कर रहे थे। मालाबार की दशा यह थी कि घरों से भागे हिन्दुओं के खेत खाली पड़े थे, कुछ घर जले थे और कुछ जले घरों का शमशान बना था। 12 अक्तूबर 1922 तक आर्य समाज से जुड़ा बच्चा-बच्चा तन-मन-धन से इस पावन कार्य में सहयोग करने लगा। जिस कारण वहां 70 हजार 911 रुपये खर्च किये जा चुके थे। लगभग तीन हजार से ज्यादा लोगों की शुद्धी कर उन्हें वापस अपने धर्म में लाने का कार्य हो चुका था। मालाबार से कालीकट भागे हिन्दुओं को वापस बसाया जाने लगा।

......शेष अगले अंक में

- विनय आर्य

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

और अब लद्दाख निशाने ....

खबर के मुताबिक इस मामले को लेकर लद्दाख बुद्धिस्ट एसोशिएशन अब प्रधानमंत्री मोदी से मिलने की सोच रहा है ताकि लद्दाख में बौद्ध महिलाओं और लड़कियों को बचाया जा सके। बुद्धिस्ट एसोसिएशन का कहना है मुस्लिम नौजवान खुद को बौद्ध बताकर लड़कियों से जान पहचान बढ़ाते हैं और शादी कर लेते हैं। बाद में पता चलता है कि वह बौद्ध नहीं मुस्लिम हैं।

दरअसल लद्दाख में लेह और करगिल दो जिले हैं और यहां की कुल आबादी 2,74,000 है। यहां मुस्लिमों की आबादी 49 फीसदी है जबकि लद्दाख में बौद्धों की आबादी 51 फीसदी है। एलबीए की आपत्ति इस बात पर है कि राज्य प्रशासन कथित तौर पर बौद्ध लड़की के धर्म परिवर्तन के ताजा मामले की अनदेखी कर रहा है। 1989 में, यहां बौद्धों और मुस्लिमों के बीच हिंसा हुई थी। इसके बाद एलबीए ने मुस्लिमों का सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार किया, जो 1992 में हटा था।

जम्मू-कश्मीर के भारत में शामिल होने के फैसले के ठीक बाद लद्दाख के बौद्ध राज्य में शेख अब्दुल्ला और कश्मीर के प्रभुत्व का विरोध करने लगे। 1947 के बाद कश्मीर के पहले बजट में लद्दाख के लिए कोई फंड निर्धारित नहीं किया गया। और तो और 1961 तक इस क्षेत्र के लिए अलग से कोई योजना नहीं बनाई गई थी। जबकि मई 1949 में एलबीए के अध्यक्ष चेवांग रिग्जिन ने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को एक प्रस्ताव भेजकर अपील की कि कश्मीर में मतदान संग्रह में यदि बहुमत का फैसला पाकिस्तान के साथ विलय के पक्ष में जाता है तो यह फैसला लद्दाख पर नहीं थोपा जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि लद्दाख का प्रशासन सीधे भारत सरकार के हाथों में हो या फिर जम्मू के हिन्दू बाहुल इलाकों के साथ मिलाकर इसे अलग राज्य बना दिया जाना चाहिए अथवा इसे पूर्वी पंजाब के साथ मिला दिया जाना चाहिए। उन्होंने दबी जुबान में यह चेतावनी भी दे डाली थी कि ऐसा न होने पर लद्दाख तिब्बत के साथ अपने विलय पर विचार करने को मजबूर हो सकता है।

आजादी के 70 वर्ष बाद एक बार फिर बौद्ध उसी प्रार्थना की ओर दिख रहे हैं। हो सकता है लद्दाख का लव जिहाद पाकिस्तान की ही एक नीति का हिस्सा हो क्योंकि पाकिस्तान चाहता है कि जब कभी कश्मीर में संयुक्त राष्ट्र की नजरों तले जनमत संग्रह हो तब तक कश्मीर का धार्मिक संतुलन इस्लाम के पक्ष में बन जाए ताकि इससे लोगों को इस्लाम की दुहाई देकर वह आसानी से उसे अपने हिस्से में मिला सके। उसकी इसी योजना का शिकार 90 के दशक में कश्मीरी हिन्दू बन चुके हैं।

फिलहाल जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट ने प्रशासन से इस जोड़े को परेशान न करने को कहा है। जबकि बुद्धिस्ट एसोसिएशन का कहना कि जम्मू सरकार बौद्धों को खत्म करना चाहती है लेकिन हम अपने खून की आखिरी बूंद तक लड़ेंगे। यहाँ मुस्लिम लड़कों ने खुद को बौद्ध बताकर उन्हें अपने झांसे में लिया। शादी के बाद लड़कियों को पता चलता है की वे मुस्लिम हैं। इसके बाद समझोते और पछतावे के अलावा क्या बचता है, 2003 से अब तक यहां पर 45 से ज्यादा लड़कियों को लव जिहाद का शिकार बनाया गया और हमेशा की तरह दावा यही किया गया कि उन्होंने ऐसा अपनी इच्छा से किया है। जब केरल, बंगाल और उत्तर प्रदेश से लव जिहाद की खबरें आ रही हैं कि पापुलर फ्रंट आफ इंडिया के लोग हिन्दू और ईसाई व अन्य मतों की लड़कियों को लव जिहाद का शिकार बना रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद अब इस मामले की जांच एनआईए को सौंपी गयी है। एनआईए ने अपनी शुरुआती जांच में इन आरोपों को सही पाया है और अब केन्द्र सरकार पापुलर फ्रंट आफ इंडिया और उससे जुड़े संगठनों को बैन करने की तैयारी कर रहा है।

हालांकि इन घटनाओं पर पूर्व की भांति राजनीति होगी और राजनीति का एक बड़ा धड़ा इस मामले में कथित अल्पसंख्यक समुदाय की ढाल बनकर खड़ा दिखाई देगा। लेकिन शायद अल्पसंख्यक कौन होते हैं? कैसे होते हैं? यह बात इराक का यजीदी समुदाय और पाकिस्तान के हिन्दू समुदाय से बेहतर कौन जान सकता है। पर प्रकृति पूजक, बौद्ध तंत्र तथा बौद्ध मत को मानने वाला यह समुदाय न तो घृणा फैलाने में विश्वास रखते हैं और न हिंसा के समर्थक हैं, लेकिन कब तक मौन रहकर सारी हिंसा और अत्याचार को झेलते रह सकते हैं?

-राजीव चौधरी

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोई गरीब या विधवा ही ....

में पिछले कुछ सालों में 105 महिलाओं को डायन बना दिया। 22 महिलाओं को गांव से बाहर निकाल दिया गया। आठ को पीट-पीटकर मार डाला गया।

जहाँ सारा देश नारी सशक्तिकरण और महिला आरक्षण विधेयक की बात कर रहा है वहीं आज ये भोपे महिलाओं को देखते ही कह रहे है इन्हें तो डायन खा रही है। अखबार लिखता है कि चित्तौड़ के पास पुठोली गांव में बाकायदा वार्ड बनाकर दु:ख-दर्द के मरीजों का इलाज करने वाला सिराजुद्दीन भोपा तो इलाज के नाम पर महिलाओं के शरीर पर हाथ घुमाता है तो भीलवाड़ा के भुणास में देवकिशन भोपा डायन भगाने के नाम पर डंडे बरसाता है। मामला यही नहीं कुछ भोपे तो महिलाओं के बाल तक उखाड़ लेते हैं। भीलवाड़ा जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर चलानिया गांव में खड़ी पहाड़ी पर भैरूजी का मंदिर है, जिसे चलानिया भैरूजी के नाम से जाना जाता है। बंक्यारानी में भोपों का कारोबार बंद होने के बाद अब उनका नया ठिकाना चलानियां गांव बना है। यहां घर-घर भोपे हैं, बारी-बारी से मंदिर में इनकी ड्यूटी लगती है। हर शनिवार को यहां रातभर जागरण चलता है, शराब के नशे में चूर अनपढ़ भोपे डायन निकालने का दंभ भरते हुए महिलाओं को जमकर प्रताड़ित करते हैं।

मामला सिर्फ प्रताड़ना तक ही सीमित नही है। कई बार अन्धविश्वास का यह कारोबार महिलाओं की जान तक लेने से नहीं हिचकता। 3 अगस्त को अजमेर के कादेड़ा में कान्यादेवी को डायन बताकर मार डाला गया। भीलवाड़ा के भौली में डायन बताकर रामकन्या को बीस दिनों तक अंधेरी कोठरी में कैद रखा गया। पुलिस ने आरोपियों को तो पकड़ लिया, लेकिन मामले के असली आरोपी उन भोपों तक नहीं पहुंचे, जिन्होंने महिलाओं को डायन करार दिया था। 23 अप्रैल 2015 को डायन प्रताड़ना निवारण अधिनियम कानून बनने के बावजूद राजस्थान के 12 जिलों में डायन प्रताड़ना के 50 केस सामने आ चुके हैं। ये वह मामले हैं, जो दर्ज हैं। जो दर्ज नहीं हो पाए उनका क्या? वह मामले नहीं थे?

अखबार लिखता है कि राजस्थान में 90 फीसदी मामलों में उन्हीं महिलाओं को डायन बनाया गया है जो दलित और गरीब हैं तथा जिनके पति की मौत हो चुकी है। मात्र तीन जिलों में डायन प्रताड़ना का शिकार हुई 46 महिलाओं में से 42 महिलाएं ऐसी थीं जो दलित, गरीब और विधवा थीं। एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिला जिसमें किसी सवर्ण अथवा अमीर वर्ग की महिला को डायन बताया गया हो। अब इस बात से भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि अशिक्षा और गरीबी का इससे विकृत रूप क्या होगा भला? हालाँकि डायन प्रताड़ना के अधिकांश मामलों में संपत्ति और जमीन हड़पने के लिए नाते-रिश्तेदार साजिश रचते हैं। कई जगह पड़ोसियों ने ही अपनी दुश्मनी निकालने के लिए इन पर डायन का तमगा लगा दिया। गांव में किसी की बकरी मर गई या भैंस बीमार हो गई, किसी के बच्चा नहीं हुआ या फिर किसी की स्वाभाविक मौत हो गई। देखने में चाहे ये बातें अलग-अलग हों, लेकिन आज भी इन चीजों के लिए गांव की किसी कमजोर महिला को शिकार बनना पड़ता है।

प्रदेश में सख्त कानून बनने के बावजूद हर साल दर्जनों महिलाओं को अंधविश्वास भरी ज्यादती डायन प्रथा का शिकार होना पड़ रहा है। डायन के नाम पर नंगा करके गांव में घूमाने, मुंडन कर देने, गर्म अंगारों में हाथ-पैर जला देने और पीट-पीटकर मार डालने जैसी भयावह यातनाएं दी जाती हैं। यह कुप्रथा हर साल कई महिलाओं की जिंदगी लील रही है। स्मरण रहे यह सब घटनाएँ उस देश में घटित हो रही है जिसमें कुछ दिन बाद बुलेट ट्रेन चलने वाली है और सोचना मिट्टी की देवी को नौ दिन पूजने वाले लोग आखिर इन जिन्दा देह पर हो रहे अत्याचार पर मौन क्यों?

- सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

मधुर तेरी याद सताती रहेगी

आर्यसमाज के आरम्भिक युग में आर्य समाज के युवक दिन-रात वेद-प्रचार की ही सोचते थे। समाज के सब कार्य अपने हाथों से करते थे। झाड़ू लगाना और दरियाँ बिछाना बड़ा श्रेष्ठ कार्य माना जाता था। तब खिंच-खिंचकर युवक समाज में आते थे। रायकोट जिला लुधियाना (पंजाब) में एक अध्यापक मथुरादास था। उसने अध्यापन कार्य छोड़ दिया। आर्यसमाज के प्रचार में दिन-रैन लगा रहता था। बहुत अच्छा वक्ता था। जो उसे एक बार सुन लेता बार-बार मथुरादास को सुनने के लिए उत्सुक रहता।

मित्र उसे आराम करने को कहते, परन्तु वह किसी की भी न सुनता था। ग्रामों में प्रचार की उसे विशेष लग्न थी। सारी-सारी रात बातचीत करते-करते आर्यसमाज का सन्देश सुनाने में जुटा रहता। अपने प्रचार की सूचना आप ही दे देता था। खाने-पाने का लोभ उसे छू न सका। रूखा-सूखा जो मिल गया सो खा लिया। प्रान्त की सभा अवकाश पर भेजे तो अवकाश लेता ही न था।

रूग्ण होते हुए भी प्रचार अवश्य करता। ज्वर हो गया। उसने चिन्ता न की। ज्वर क्षयरोग बन गया। उसे रायकोट जाना पड़ा। वहाँ इस अवस्था में भी कुछ समय निकालकर प्रचार कर आता। नगर के लोग उसे एक नर-रत्न मानते थे। लम्बी-लम्बी यात्राएँ करके, भूखे-प्यासे रहकर, दु:ख-कष्ट झेलते हुए उसने हँस-हँसकर अपनी जवानी ऋषि की राह में वार दी।

ऐसे कितने नींव के पत्थर हैं जिन्हें हम आज कतई भूल चुके हैं। अन्तिम वेला में भी मथुरादासजी के पास जो कोई जाता, वह उनसे आॅसमाज के कार्य के बारे में ही पूछते। अपनी तो चिन्ता थी ही नहीं।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक धर्म और विज्ञान

– गौरीशंकर भारद्वाज

आर्य सन्देश के पूर्व अंक में लेखक ने वैदिक धर्म और विज्ञान लेख में यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि वैदिक धर्म शाश्वत, सार्वभौमिक एवं पूर्णतः विज्ञानिक धर्म है। इसके लिए लेखक ने विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से भी अवगत कराया है। इसी श्रृंखला में लेखक ने इसे और विस्तार देते हुए अपनी लेखनी को गति देते हुए लिखा है.....

गतांक से आगे

जीवात्मा

वैदिक दृष्टिकोण:– 'इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख ज्ञानान्यात्मनों लिंगमिति' न्याय दर्शन–1-1-10 अर्थात् इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान जीवात्मा के लक्षण है। जीवात्मा की निम्न विशेषताएं हैं:–

जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र हैं किन्तु जीवात्मा के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर उसे फल देता है।

पुनर्जन्म :– जीवात्मा का पुनर्जन्म होता रहता है। संचित कर्मों का फल भोगने के किए पुनर्जन्म अवश्यंभावी है। शरीर मरता है किन्तु जीवात्मा अमर है। गीता में लिखा है, 'जातस्य ध्रुवा मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतश्च' (2/27(अर्थात् जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के बाद जन्म अवश्यम्भावी है। आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से सिद्ध हुआ है कि जीवात्मा अमर व शाश्वत है। अमेरिका के Wake Forest University School of Medicine के Prof. Robert Lanza ने परीक्षणों से सिद्ध किया है कि वर्तमान जीव मृत्यु के पश्चात् भी अस्तित्व बनाए रखकर सतत् जीवन प्रक्रिया को सुरक्षित रखने में सक्षम हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य वैज्ञानिक लोवेरा डिक्सन ने अपनी कृति Religion and Mortality में दृढतापूर्वक दावा किया है कि "वास्तव में यह सन्तोषप्रद भावना है कि हमारी वर्तमान समर्थताएं हमारे गत जीवन के कार्यों द्वारा निर्धारित होती हैं और हमारे वर्तमान कर्म पुनः हमारे भावी जीवन को निर्धारित करते हैं।

जीवात्मा द्वारा भाषा और लिपि का आविष्कार:– वैदिक संस्कृत भाषा संसार की सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत अपनी पूर्ण वर्णमाला, धातुपाठ, उपसर्ग, प्रत्यय, 3 लिंग, 3 वचन, 8 विभक्ति, सन्धि-कौशल, समास-विन्यास और स्वर विज्ञान के लिए अद्वितीय और अनुपम है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान **Buran Cuvir** ने अपनी रचना 'Lectures on Natural Sciences' में मत प्रगट किया है कि, "सर्व ज्ञात भाषाओं में संस्कृत सर्वाधिक नियमित है और विशेषताया इस कारण अद्भुत है कि उसमें योरोप की भाषाओं तथा प्राचीन भाषाओं यथा ग्रीक व लेटिन आदि भाषाओं के धातु हैं।" इसी प्रकार संस्कृत की ब्राह्मी लिपि उत्कृष्ट और पूर्ण वैज्ञानिक है। इसके स्वर और व्यंजन जैसे हैं, वैसे ही लिखे जाते हैं, जैसा कि मनुष्य की उसके उच्चारण के समय आकृति बनती है। उसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा ही पढ़ा जाता है और वैसा ही बोला जाता है।

गणित- बीजगणित- ज्यामिति- सांख्यिकी:– वेद मंत्रों में गणित के सूत्र यत्र-तत्र मिलते हैं। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त एवं भास्कराचार्य आदि गणितज्ञों ने वेदों में निहित गणित के रहस्यों को उजागर करते हुए शून्य (0), दशमलव प्रणाली, वर्गमूल, घनमूल, अनुपात व ब्याज के सूत्रों का आविष्किार किया। आर्यभट्ट ने ज्यामिति के अन्तर्गत त्रिभुज, चतुर्भुज, आयत तथा क्षेत्रफल के सूत्र दिए हैं।

महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टाइन ने वैदिक ज्ञानी भारतीयों की प्रशंसा करते हुए कहा कि, "We owe a lot to the Indians who taught us how to count without which no worth while scientific discovery could have been made."

प्रख्यात वैज्ञानिक Lancelot Hogben ने अपनी प्रसिद्ध कृति Mathmatics for Millons में लिखा है, "There has been no more **revolutionary** contribution than the one which Hindus made when they invented **zero.**

प्रसिद्ध पाश्चात्य गणितज्ञ थीबो ने रहस्योद्घाटन करते हुए दावा किया है, "शुल्ब सूत्र ईस्वी सन् के पूर्व आठवीं शताब्दी के हैं। इनमें **47वीं साध्य** जो आजकल ग्रीक विद्वान 'पैथागोरस' के नाम से प्रसिद्ध है, वास्तव में वह पैथागोरस के सैकड़ों वर्ष पूर्व भारतीयों को ज्ञात हो चुकी थी। निःसन्देह ज्यामिति के इन सिद्धान्तों को पैथागोरस ने भारतीयों से ही सीखा था।"

प्राकृति : "सत्व रजस्त मसां साम्यावस्था प्रकृतिः (सांख्य दर्शन -1-61)"

अर्थात् सत्व, रज और तम के संघात को प्रकृति कहते हैं। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गतिमान होने से इलैक्ट्रॉन ही **रजस** है और इसके विपरीत होने से प्रोटोन **तमस** है तथा न्यूटॉन ही **सत्व** है। प्रख्यात पाश्चात्य वैज्ञानिक विलियम सैसिल डैम्पियर वीनम ने अपनी कृति **'History of Sciences and its relation with Philosophy and Religion'** में प्रकृति के बारे में लिखा है कि "मैटल को द्रव्य मानकर उसको परमाणु और अणु में विभाजित समझा गया था और फिर परमाणुओं के भाग किए गये जिनको हम प्रोटॉन और इलैक्ट्रॉन के नाम से जानते हैं और अब इनके भी भाग किए गये जिनको **रेडियेशन** का श्रोत या तरंग रूप में कह सकते हैं, "**नासतो विद्यते ना भावो विद्यते सतः**" अर्थात् वेद सृष्टि की उत्पत्ति अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं मानता जो विज्ञान की मान्यता के अनुकूल ही है। डाल्टन की एटोमिक थ्योरी कहती है कि पदार्थ का नाश नहीं होता। परमात्मा ने आकाश उत्पन्न किया, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से प्राणियों की उत्पत्ति हुई। चरक संहिता के श्लोक (1-41) में लिखा है कि "**शरीरेन्द्रिय सत्वाम संयोगोधारि जीवितम**" अर्थात् महाभूत का बना शरीर इन्द्रियों, सत्व (मन,बुद्धि, आत्मा) के संयोग को जीवित प्राणी कहते हैं।

सृष्टि (पृथ्वी) की आयु :– वैदिक वाड्मय में सृष्टि की आयु एक अरब सतानवे करोड़ उन्तीस लाख उन्चास हजार एक सौ चौदह वर्ष मानी जाती है। इस अवधि को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। पृथ्वी की आयु का पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने अनेक साधन व उपाय अपनाए हैं जिनमें मुख्य साधन 'रेडियो एक्टिविटी' है, जिसके द्वारा चट्टानों में 'यूरेनियम' तथा थोरियम के माध्यम से पृथ्वी की आयु का अनुमान लगाया गया है। इसी को आधार मानकर **Dr. William Rose** ने अपनी रचना **'Outline of Modern Knowledge'** में लिखा है **"The age of the earth is about two thousand million years."** इसी तरह प्रसिद्ध वैज्ञानिक **Lecomte Dunouy** ने अपनी कृति **'Human Destiny'** में दावा किया है कि **"Our globe must be about two thousand million years old and can in no case be much older."**

प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक **श्री पन्यम नारायण गौड़** ने अपनी पुस्तक **"Introduction to the message of the 20th century'** में प्रमाणित किया है कि वेदों में **भौतिक विज्ञान और रसायन शास्त्र** के तत्व स्पष्टतया पाये जाते हैं।" (पृष्ठ–240) कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:–

(1) श्री रामचन्द्र जी पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या लौटे थे।(रामायण)

(2) यजुर्वेद के 6/21 मंत्र में वायुयान व जलयान का उल्लेख है–'समुद्र गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षंगच्छ स्वाहा अर्थात् तू जलयान द्वारा समुद्र की यात्रा कर और वायुयान द्वारा अन्तरिक्ष (आकाश) की यात्रा कर।

(3) महर्षि भारद्वाज ने 'यंत्रसर्वस्व (ग्रन्थ लिखा है, जिसमें विमानों की रचना का सविस्तार वर्णन किया गया है।

(4) ऋग्वेद के मंत्र 3/58/8 में लिखा है–'रथोहत्यमृतजा अद्रिजूतः परिद्यावा पृथिवी याति सद्य अर्थात् यंत्र संचालित रथ आकाश और पृथ्वी की यात्रा करता है।

(5) ऋग्वेद के 6/58/3 में पनडुब्बियों का वर्णन है:– यास्ते पूषन्! नावः अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति। तामियासिदूत्या सूर्यस्य कामेन कृतश्रव इच्छमानः।।

अर्थात् हे पूषन्! जे तेरी लोहादि की बनी नौकाएं समुद्र के भीतर चलती हैं, मानो तू इनके द्वारा इच्छापूर्वक अर्जित यश को चाहता हुआ सूर्य से दूरत्व प्राप्त कर रहा है।

(6) ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सूर्य सिद्धान्त' के श्लोक 1-3 में लिखा है–

"वेदागंमर यमखिलं ज्योतिषां गति कारणं।" अर्थात् वेदांग से नक्षत्रों और सूर्य की गति का ज्ञान होता है।

(7) ऋग्वेद के 10/22/4 मंत्र में लिखा है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

(8) ऋग्वेद के 1/164/11 मंत्र में लिखा है कि पृथ्वी गोल है तथा 1/35/2 मंत्र में लिखा है कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। हजारों वर्षो से साधारण पंडित भी निश्चित दिन व समय पर सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण होने की घोषणा करते हैं।

(9) अथर्ववेद का उपांग आयुर्वेद है। आयुर्वेद के ग्रन्थ 'चरक' के श्लोक 30/20 में कहा गया है कि अथर्ववेद में मुख्यतया चिचित्सा का प्रतिपादन है।

(10) सर्जरी–कटी टांगें व कटा धड़ जोड़ने की शल्य चिकित्सा अश्विनियों के नाम से प्रसिद्ध है।

(11) सुप्रसि/ चिकित्सा शास्त्री Dr. B.C.Rele ने अपनी पुस्तक "The Vedic Gods-As Figurs of Biology" में लिखा है "हमारा आजकल का नाड़ी संस्थान की रचना सम्बन्धी ज्ञान ऋग्वेद के जगत-विषयक वर्णनों से इतनी अच्छी तरह से मेल खाता है कि मन में कई बार यह प्रश्न उठता है कि क्या वेद वास्तव में केवल धार्मिक ग्रन्थ हैं या वे शरीर विज्ञान और नाड़ी–संस्थान की रचना विषयक ग्रन्थ हैं जिनके पूर्ण ज्ञान के बिना मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विचार ठीक ढंग से समझ में नहीं आ सकते।"

अन्त में हम 'वैदिक धर्म और विज्ञान' के परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डालने वाले प्रख्यात ब्रिटिश विद्वान एवं महान दार्शनिक W.D.Brown के उद्गारों के साथ अपने कथन को समाप्त करते हैं। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'The Superiority of Vedic Religion' में लिखा है कि "Vedic Religion is a thoroughly scientific religion, whee religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy." अर्थात् वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है, जिसमें धर्म और विज्ञान साथ-साथ हाथ में हाथ डाल कर चलते हैं। इसमें धर्म शास्त्र पूर्णतया विज्ञान और दर्शन पर आधारित है। ❑

मायापुरी में आर्यसमाज की स्थापना

30 जुलाई से 3 सितम्बर तक चले यज्ञ प्रचार कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य के संरक्षण में रजनीश वर्मा प्रचार मंत्री जनकपुरी डी ब्लाक ने मायापुरी क्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना का बीड़ा उठाया। इस विशाल मायापुरी आद्योगिक क्षेत्र में अभी तक आर्य समाज नहीं था। यज्ञ के प्रथम सप्ताह लगभग 50 उत्साहित महिलाओं एवं बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया। तीसरे सप्ताह 120 से भी अधिक जनमानस की उपस्थिति रही। आचार्य सत्य प्रकाश शास्त्री, अमृता आर्या, सुनीता बग्गा, कर्मयोगी, सरिता एवं अरुण अग्रवाल जी का सहयोग प्राप्त हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने श्री रजनीश वर्मा जी को नई आर्य समाज मायापुरी का संयोजक नियुक्त किया। आर्य समाज की कार्यकारिणी में सर्वश्री रामदेव, जोगेन्द्र वर्मा, लक्ष्मण यादव, अनिल, राम कृपाल, सुभाष यादव, विरेन्द्र को सम्मिलत किया गया।

दुर्गा उत्सव - वास्तविकता

- प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

.....8 हाथ इस बात का प्रतीक हैं कि चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जब एक साथ होगें तो शक्ति का रूप बनेगा। अर्थात दो हाथ ब्राह्मण के, दो हाथ क्षत्रिय के, दो हाथ वैश्य के, दो हाथ शूद्र के इकट्ठे हो जावेंगे तभी ये सनातन धर्म सशक्त होगा, ऊँच-नीच के भेदभाव समाप्त होंगें। यही दुर्गा के 8 हाथों का सन्देश है। ....

भारत वर्ष पर्वों का देश है ऋतु परिवर्तन, महापुरुषो के जीवन पर धार्मिक मान्यताओं या राष्ट्रीय पर्वों अथवा किसी बड़ी मानवीय उपलब्धियों पर प्रायः ये मनाये जाते हैं। पर्व से जीवन में प्रसन्नता, ऊर्जा, मधुरता आती है और आपसी संगठन, भाईचारे की भावना बढ़ती है।

इन पर्वों को मनाने के पीछे कोई दर्शन होता है अर्थात वह पर्व मानव समाज को कोई सन्देश देता है। जैसे रावण दहन जीवन में पल रही आसुरी प्रवृत्तियों का नाश करने का, होली दहन आपसी ईर्ष्या, बुराई को दहन कर प्रेम से गले मिलने का, दशहरा शौर्यता का, दीपावली स्वच्छता और सम्पन्नता के साथ अन्धेरे को दीपावली की सबसे काली अमावस्या में दीपक जलाकर अन्धेरे को दूर कर प्रकाश फैलाने का सन्देश देता है अर्थात् जीवन से अज्ञान रूपी अन्धेरे से दूर होकर ज्ञान प्रकाश से भर जावें।

किन्तु आज समाज ऐसे जीवन उपयोगी दर्शन से दूर होकर बाहरी प्रदर्शन तक ही रह गया है। इसलिए पर्वो से जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। केवल कुछ दिनों का मनोरंजन ही मिल रहा है। यह पर्वो का उचित लाभ नहीं है। इसलिए पर्वो को जाने और मानें तभी उसका सही और पूर्ण लाभ हो सकता हैं। इसी प्रकार दुर्गोत्सव में काली को शक्ति के रूप में मानते हुए उसकी स्थापना कर 9 दिन तक उसके सामने तरह-तरह के आयोजन करके मनाते हैं।

किसी ने दुर्गा का यह स्वरूप समाज के सामने समाज को एक शिक्षा देने की भावना से प्रस्तुत किया होगा। जिसमें नारी की महानता और महत्व को दुर्गा के विभिन्न रूपों से समझाने का दर्शन दिया है। नारी समाज और संसार के निर्माण की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। कहा गया है ''**माता निर्माता भवति।**'' नारी ममत्व, प्रेम, अन्नपूर्णा, प्रथम गुरू, परिवार व समाज की मुख्य धुरी है वही वह अपने शक्तिशाली रूप से दुष्टों का मर्दन करने वाली वीरांगना भी है।

काश दुर्गा शौर्यता के इस रूप को नारी जाति अपने जीवन में अपना लें तो नारी जाति असुरक्षित नहीं रहेगी।

ये हाथ जहां गहनों से सजाने के लिए है वहीं आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र भी उठाले यह प्रेरणास्पद चित्र नारी जाति को शिक्षा देता है। रानी दुर्गावती, लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं ने दुर्गा के इस स्वरूप को आत्मसात किया है।

दुर्भाग्य से शक्ति का प्रतीक उस माँ से शौर्यता का समाज से दुष्प्रवृत्ति हटाने का अदम्य साहस की शिक्षा नहीं ली जा रही है। मात्र मनोरंजन के लिए संगीत, नृत्य और निरर्थक हास्य कार्यक्रमों का आयोजन इसका उद्देश्य रह गया। इतने लम्बे समय तक चलने वाले त्यौहार से कोई अच्छा सन्देश जब समाज को मिले तो उसका सही लाभ है।

जैसे काली के 8 हाथ इस बात का प्रतीक हैं कि चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जब एक साथ होंगें तो शक्ति का रूप बनेगा। अर्थात् दो हाथ ब्राह्मण के, दो हाथ क्षत्रिय के, दो हाथ वैश्य के, दो हाथ शूद्र के इकट्ठे हो जावेंगे तभी ये सनातन धर्म सशक्त होगा, ऊँच नीच के भेदभाव समाप्त होंगें। यही दुर्गा के 8 हाथों का सन्देश है।

हम अज्ञानता में जिसकी पूजा करते हैं, जिसे महान बताते हैं किन्तु कई स्थानों पर देखा गया कि फिल्मी धुनों पर जोर-जोर से फूहड़ता के गीत बजाये जाते हैं भद्दे नृत्य किये जाते हैं एक दृष्टि से यह उस दुर्गा का अपमान है। यदि दुर्गा पूजा करनी है तो उसके चित्र तक सीमित न रहो, उसके स्वरूप से जो चरित्र प्रदर्शित होता है उसे अपनाने की आवश्यकता है।

इन्हीं दिनों में कुछ अप्रिय घटनाए और दुःखदायी परिणाम भी घटित होते हैं, उसके प्रति भी हमें ध्यान देना आवश्यक है। कुछ बिन्दु इसके सन्दर्भ में निम्नानुसार हैं -

अपने उत्सव को हम ही कभी-कभी अज्ञानता के कारण अथवा अन्य किसी साम्प्रदायिक भावना से प्रेरित होकर उसके स्वरूप को बिगाड़ देते हैं और अपने कार्यो से अनेक परिवारों और समाजों को परिवारों के लिए व्यवधान उत्पन्न कर देते हैं। इसमें मुख्य रूप से बड़ी तेज अवाज में और देर रात तक माइक, ध्वनि प्रसारण और सबसे ज्यादा दुःखदायी साधन डीजे का अनियन्त्रित उपयोग करते हैं। संगीत की मधुरता कम आवाज में कर्ण प्रिय होती है जोर से तेज आवाज में एक स्पर्धा की भावना से बजाए जाने वाला संगीत कई लोगों को जैसे बीमार बच्चों के लिए ये हानिकारक होता है और डीजे हृदय पीड़ित लोगों के लिए हानिकारक होता है। इससे वह व्यक्ति आपके इस प्रदर्शन को अच्छा नहीं कहता, धन्यवाद नहीं देता। दुःखी मन क्या कहेगा? स्वयं विचार करें।

हमारा उद्देश्य इन धार्मिक आयोजनों से सबको सुख, शान्ति और प्रसन्नता का होना चाहिए।

नव दिन का समय एक ऐसा समय है जिससे हजारों लोग एक अच्छी भावना को लेकर एकत्रित होते हैं। इस समय का उपयोग अच्छे भाषणों, कवि सम्मेलनों, नाटक आदि से करके परिवार, समाज और राष्ट्र को एक अच्छा सन्देश दे सकते हैं। जिस प्रकार महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने गणेश उत्सव के नाम पर हजारों लोगों को इकट्ठा किया था। ऐसा ही कुछ इसमें भी होना चाहिए।

विशेष कर श्रद्धालुओं में एक शिष्टता, संयम और सादगी का व्यवहार होना चाहिए। उच्छंखलता, अश्लीलता, पहनावे से स्पष्ट होती है। एक देवी के सामने जब हम जाएं तो ध्यान रखना चाहिए।

देखा ये जाता है कि फिल्मी स्टाईल में अनेक बच्चे भीड़ में घुसकर अव्यवस्था फैलाते हैं इस पर पालकों को और आयोजकों को ध्यान देना चाहिए।

कार्यक्रम नौ दिन तक होते हैं किन्तु उनकी एक समय की सीमा तय होना चाहिए। ताकि जो लोग बीमार हैं जिन्हें डॉक्टरी सलाह से आराम की आवश्यकता है, उन्हें परेशानी न हो।

दुर्गा स्थापना के लिए जो स्थान बनाएं वह स्थान ऐसा होना चाहिए जिससे आवागमन प्रभावित न हो। आवागमन अवरुद्ध होने से भीड़ बढ़ती है कभी-कभी मार्ग जाम हो जाता है, विवाद बढ़ते हैं।

इसलिए धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किसी प्रकार की अव्यवस्था फैलाने के लिए नहीं होना चाहिए। धर्म का उद्देश्य समाज को सुख शान्ति सहयोग करना होता है।

कम से कम इन दिनों में किसी भी प्रकार का नशा न करने का संकल्प लेना चाहिए ताकि नशे की स्थिति में ही आदमी मानसिक सन्तुलन खोकर अप्रिय घटनाओं को जन्म देता है। इन नौ दिनों में बड़े बड़े कई कार्यक्रम होते हैं जिसमें जनमानस इकट्ठा होता है। उसमें से कुछ व्यक्ति नशे में होकर मिल जायें तो वहां अव्यवस्था होने का खतरा बना रहता है। जो कभी कभी साम्प्रदायिक विवादों का कारण भी बन जाता है।

पूरे देश की कई रिपोर्ट हैं, इन दिनों में ही नवयुवक बच्चों को परिवार से देर रात तक दूर रहने की स्वतन्त्रता कार्यक्रम हेतु दी जाती है और उसके परिणाम भी गलत होते हैं। इसलिए समय पर भी नियन्त्रण रखें ताकि वे कार्यक्रम में भाग लेवें किन्तु एक समय सीमा तक ताकि अप्रिय घटना से हम पीड़ित न हों ।

उपरोक्त बातें समाज हित में हैं, किसी की भावना को कष्ट पहुंचाने की दृष्टि से नहीं हैं किन्तु एक अच्छे सन्देश के रूप में प्रस्तुत हैं।

- इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

आर्यसमाज की वैबसाइट www.thearyasamaj.org अवश्य देखें

सभा का व्हाट्एप्प :
आओ जुड़ें - साझा करें विचार

अपने विवाह योग्य बच्चों का आर्यसमाज मैट्रीमोनी पर पंजीकरण कराएं : आर्य परिवार का रिश्ता पाएं

आर्य समाज की समस्त जानकारी प्राप्त करें

Veda Prarthana - 16

May My Yajnas (Conduct in Life) be Virtuous and Sincere, Not Mere Rituals

अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।।

Asmattvam adhijato asi tvadayam jayatam punah. Asou swargaya lokaya swaha.

(Yajur veda 35:22)

Asmat from God, Who enlightens everybody. tvam adhijato asi you, the performer of this yajna, have received birth and the knowledge of the Vedas which enlighten us, punah in turn, now tvat ayam jayatam it is your duty to promote God as you perform this yajna and light this physical fire. You do so by lighting a similar inner spiritual flame; by following God's message, none else; and by doing virtuous deeds in your personal life. Moreover, you must spread the same message to others. Asou by doing so, you the host of this yajna swargaya lokaya will gradually progress in life and become a candidate for moksha, swaha this is the purpose of yajna (virtuous conduct in life) and indirectly of putting oblations in the physical fire because the yajna is for the welfare of all.

What is Yajna (also spelled Yagya)? Yajna is not limited to doing a fire ceremony by lighting fire in the Havan Kund and chanting select mantras. True Yajna is the proper conduct of life in all aspects. The physical fire is a reminder that we should kindle and enlighten our soul and mind i.e. our inner spiritual self.Also just as the physical fire in Havan Kund by burning ghee and samigri (mixture of fragrant and medicinal herbs and incense) purifies and brightens the surrounding environment, similarly we should first purify and enlighten ourselves by doing virtuous deeds, and then do selfless deeds as a service for the community as well as make the community a better and more virtuous place for all.

Dear God, You are called Agnideva because You are Divine Being who enlightens everybody and also are Benevolent to everyone. When we first light the fire in the Havan kund at the beginning of Yajna and say Om bhur-bhuva-swaha, we imply, "Dear God, we honor You by stating that You are Universal Protector and Benefactor (Om), the Giver and Sustainer of all life (bhuh), the Remover of all sorrows (bhuvah), and the Bestower of bliss (swaha). By lighting the physical fire and then making it hotter and more brilliant by adding ghee (i.e. clarified butter, butter oil) and adding more kindling, we symbolically state that we will kindle and enlighten our soul to become more virtuous in the future. Dear God, please enlighten us the yajnakarta i.e. the performer of the physical yajna by giving us new inspirations, new thoughts that change and transform our current life whereby every day we progresively become more virtuous in our actions i.e. follow dharma as well as get rid of ignorance, false beliefs, wrong or non-virtuous deeds (adharma), fears, doubts, lack of peace, and unhappiness in life. After getting rid of all of these sorrow producing obstacles in life, by Your grace may we acquire wisdom, strength, courage, bravery, happiness and joy in life.

Dear God, You are called Agnideva because You enlightens everybody. Dear God, we have made consistent effort to perform this havan-yajna every morning and evening for the past many years. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because the performance of this havan-yajna has been a ritual, but our mind and soul have so far not found true enlightenment, nor have we made much personal effort to change our lives to obtain true enlightenment. Dear God, You are called Vahindeva because You like an able benevolent charioteer carry us to our proper destination. Dear God, while performing havan-yajna we have thousands of times said the word swaha which means that this oblation we are putting in the fire is for the benevolence of all living things. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because saying the word swaha has been a ritual, but our mind has not yet become generous towards others.

Dear God, You are called yajnagne because this fire ceremony is done to honor You and other honorable persons gathered at the havan-yajna. Dear God, while performing the havan-yajna at the end of chanting many mantras every morning we have said the words idam na mama which means that this oblation we are putting in the fire is not for my benefit but to honor You and for the welfare of all living things. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because saying the words idam na mama have been a ritual, but in our personal lives we continue to have deep attachment to material goods and prosperity. Moreover, we consider ourselves to be the owners and masters of the material goods. Dear God, we have, however, forgotten the truth that actually You are the

- Acharya Gyaneshwarya

Ultimate Master of all wealth and material things, we are at best its temporary custodians. At our death all wealth will be left behind we will not be able to take it with us.

Dear God, You are called Divyagne i.e. Divine Light beacuse You help people acquire bright qualities in their lives. Dear God, while performing havan-yajna we have hundreds of times put more kindling in the havan kund to make the fire more bright. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because this has been a ritual, but our minds are still selfish as well as our moral values are shallow and firmly established in our minds. Moreover, we have not yet made sufficient effort to change our values to virtuous values as well as to the performance of virtuous deeds.

Dear God, You are called Pavitragne i.e. Purifying Light because those who follow Your teachings and move away from performing wrong or evil deeds become pure and virtuous in thoughts, words and deeds. Also, he/she gradually eliminates the influence of previous bad sanskars (root impressions and memories of the past in this life as well as previous lives), symbolically as if he/she is burning away the bad sanskars, like the physical fire burns material things. Dear God, while performing the havan-yajna we have thousands of times put oblations of ghee to brighten the fire and purify the environment. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because putting more ghee in the havan kund has been a ritual, but we have start yet not made much effort to purify our personal lives by discarding bad habits and adopting good virtuous habits to replace them.

Prarthana-16 To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 28 (फ)

गतांक से आगे....

द्रुतविलम्बितम् : इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12–12 वर्ण होते हैं, जिस का लक्षण और स्वरुप निम्नलिखित है:

द्रुतविलम्बितमाहो नभौ भरौ

अर्थात् द्रुतविलम्बित छ्न्द के प्रत्येक चरण में नगण, भगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं ।

। । । ऽ ।। ऽ । ।ऽ । ऽ

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

नीतिशतकम् ।। 59

वसन्ततिलका : यह चौदह वर्णो का छन्द है। तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरुओं के क्रम से इसका प्रत्येक चरण बनता है। पद्य में लक्षण तथा उदाहरण देखिए:–

उक्ता वसन्ततिलका तभजाः जगौ गः।

उदाहरण:

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

हे हेमकार परदुःख–विचार–मूढ
किं मां मुहुः क्षिपसि वार–शतानि वह्नौ।
सन्दीप्यते मयि तु सुप्रगुणातिरेको–
लाभः परं तव मुखे खलु भस्मपातः।।

भुजङ्गप्रयात : इस छन्द में चार यगणों के क्रम से प्रत्येक चरण बनता है, जिसका पद्य–लक्षण और स्वरुप यह है:

भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः

उदाहरण:

। ऽ ऽ । ऽऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

प्रभो ! देशरक्षा बलं मे प्रयच्छ
नमस्तेऽस्तु देवेश ! बुद्धिं च यच्छ ।

छन्द रचना

सुतास्ते वयं शूरवीरा भवाम
गुरुन् मातरं चापि तातं नमाम।।

वंशस्थ : वंशस्थ या वंशस्थविल: इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं । पद्य में लक्षण और उदाहरण देखिए: **वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ**

उदाहरण:

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ । ऽ

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते
न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
पराऽस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञान–बल–क्रिया च।।

श्वेताश्वतर 6 /8

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

पाठकगण कृपया ध्यान दें

आर्य सन्देश के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य सन्देश की कुछ प्रतियां डाक से प्रेषित करने के उपरान्त कुछ दिनों बाद डाक वितरित न होने के कारण कार्यालय में वापस आ जाती हैं। आप सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि आप अपना सम्पर्क सूत्र (दूरभाष/चलभाष) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में सम्पादक को अतिशीघ्र प्राप्त कराने की कृपा करें ताकि आपसे सम्पर्क कर कारण का स्पष्टीकरण हो सके।

–सह व्यवस्थापक, 9540040324

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज आर्य नगर ग्रुप हाउसिंग सोसायटी पडटपड़ गंज में तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य रामचन्द्र जी (हरिद्वार) थे। इस अवसर पर भजन श्री देवेन्द्र आर्य के हुए। *- मन्त्री*

वार्षिकोत्सव एवं भजन संध्या

आर्यसमाज इन्दिरापुरम गाजियाबाद के 5वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन 15 अक्तूबर को किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रवचन डॉ. जयेन्द्र कमार एवं भजन पं. कुलदीप आर्य एवं मनीषा आर्या के होंगे।

- विजय गर्ग, प्रधान

त्रिदिवसीय यज्ञ एवं सत्संग

आर्यसमाज मण्डावली द्वारा गली नं. 6 में 30 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. प्रियंका पाण्डेय जी एवं प्रवचन डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी के होंगे। *- रामनिवास आर्य, प्रधान*

पं. आशानंद शास्त्री का 117वां जन्मोत्सव सम्पन्न

वैदिक मनीषी, शिक्षाविद्, कर्मयोगी पं. आशानन्द शास्त्री का 117वां जन्मोत्सव लाजपत नगर, नई दिल्ली में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम संयोजक श्री सुरेन्द्र शास्त्री के अनुसार इस अवसर पर ''गायत्री महायज्ञ'' का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य, द. दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी, श्री चतर सिंह नागर मंत्री, पार्षद श्री सुनील सहदेव, पूर्व पार्षद श्री सुभाष मल्होत्रा, श्रीमती पुष्पा शास्त्री सहित अनेक गणमान्य, प्रतिष्ठित जनों ने पं. आशानन्द के वेद प्रचार व रचनात्मक कार्यो पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अनेक आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। *-चन्द्रमोहन आर्य*

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

भक्ति यज्ञ व सत्संग

आर्य समाज मन्दिर, गांधी नगर, दिल्ली के तत्त्वावधान में 2 अक्टूबर प्रातः 8.30 बजे भक्ति यज्ञ व सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। आर्य पुत्री पाठशाला के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। मुख्य अतिथि श्री रमेश चन्द गुप्ता निगम पार्षद्, गांधी नगर होंगे एवं मुख्य वक्ता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व महामंत्री श्री विनय आर्य जी होंगे।

-शिवशंकर गुप्ता, मंत्री

57वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सिंहानी गाजियाबाद के तत्त्वावधान में 14 से 17 सितम्बर के बीच 57वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य वक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने गाजिबाद के अधिवक्ताओं के बीच वैदिक न्याय व्यवस्था एवं नैतिकता के विषय में उपदेश दिये व वेदमंत्रों की व्याख्या की तथा यज्ञ उपासना के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री आशु वर्मा नगर निगम गाजियाबाद के महापौर, भाजपा मण्डल अध्यक्ष श्री संजीव त्यागी, वरिष्ठ आर्य नेता श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी बहन श्रीमती प्रतिभा सिंघल ने पूर्णाहुति के दिन अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई।

-वीर सिंह, संयोजक व उपप्रधान

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर का 51वां वार्षिकोत्सव

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर का 51वां एवं गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर का 47वां वार्षिकोत्सव 9 से 15 अक्तूबर के मध्य आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत महात्मा चैतन्यमुति, सुन्दरनगर, डॉ वेदप्रकाश श्रोत्रिय, पं. अजय आर्य, स्वामी विश्वानन्द सरस्वती, माता सत्यप्रिया यदि, पं. राजेश जी एवं अनेक अन्य आर्य विद्वान अपने-अपने विचार प्रकट करेंगे। इस अवसर पर रक्तदान शिविर, शिक्षा सम्मेलन धर्मरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, स्नातक सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किये जाएंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महातमा चैतन्य मुनि जी करेंगे। *- मन्त्री*

आवश्यकता है आर्य पुरोहित की

आर्य समाज सैक्टर-7 रोहिणी, नई दिल्ली को गुरुकुलीय शिक्षा से परिपक्व आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। योग्य व्यक्ति श्री नरेश पाल आर्य प्रधान जी से मो. 9540046424 पर शीघ्र सम्पर्क करें।

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

5,10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1

मो. 9540040339

विद्वानों के सम्मान से होगा वेदों का प्रचार - धर्मपाल आर्य

ठाकुर विक्रम सिंह जन्मोत्सव पर ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट की ओर से आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली में 17 सितम्बर को आयोजित अभिनन्दन समारोह में देश भर के आर्य विद्वानों, लेखकों, पत्रकारों को सम्मानित किया गया। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू ने कहा ''यह आर्य समाज का रचनात्मक कार्य है, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के बुद्धिजीवियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।'' वहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा ''आर्य मनीषियों का अभिनन्दन करने से वेद प्रचार तथा आर्य समाज की गतिविधियां बढ़ेंगी।''

एमिटी विश्वविद्यालय के डॉ. आनन्द चौहान, आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने सर्वाधिक सत्यार्थ प्रकाश प्रचार-प्रसार के आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रमुख श्री धर्मपाल आर्य, साहित्य प्रचार में आर्य प्रकाशन के श्री संजीव कोहली, गोबिन्दराम हासानन्द के श्री अजय आर्य, शुद्धि समाचार से श्री बनवारी लाल, अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द वेद पीठ के महामंत्री श्री सत्यानन्द आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पं. बाल कृष्ण आर्य (भजनोपदेशक) पं. नन्दलाल निर्भय (भजनोपदेशक एवं प्रचारक) आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के कार्यालयाध्क्ष श्री जय प्रकाश शास्त्री, पत्रकार श्री बनवारी सिंह, पत्रकार चन्द्र मोहन आर्य, आर्य समाज हनुमान रोड के आचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री, डॉ. देव शर्मा वेदालंकार, श्री भगत सिंह शास्त्री, भजन गायिका क्षमा पुरवार, श्री प्रेम पाल शास्त्री, पं. मेघश्याम वेदालंकार, आचार्य रूप किशोर शास्त्री, श्री अजय सहगल को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ठाकुर विक्रम सिंह जी के सुपुत्रों सर्वश्री प्राज्ञ आर्य, इन्द्रजीत सिंह, सुशील, राहुल, वरुण वीर का भरपूर सहयोग रहा।

-चन्द्रमोहन आर्य

वैदिक विचारों से ही होगा संसार का कल्याण - ओम बिरला

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्त्वावधान में आर्य सम्मान समारोह एवं स्मारिका लोकार्पण कार्यक्रम 17 सितम्बर 2017 को विज्ञान नगर स्थित सर्वोदय पैरामाउण्ट विद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा-बूंदी के सांसद श्री ओम बिरला ने अपने उद्बोधन में कहा, 'वैदिक विचारों से ही संसार का कल्याण होगा। आर्य समाज के विचार सत्य एवं यथार्थ हैं तथा सभी लोगों द्वारा स्वीकार करने योग्य हैं। कार्यक्रम अध्यक्ष कोटा विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. पी.के.दशोरा ने कहा, 'संसार में सुख, समृद्धि और आरोग्य के लिए आर्य समाज जनोपयोगी कार्य कर रहा है जो अभिनंदनीय हैं।' इस अवसर पर आर्य विद्वानों, आर्य पुरोहितों, समाज सेवियों एवं सी.आर.पी.एफ. कमाडेंट चेतन चीता के पिताजी रामगोपाल जी को स्मृति चिह्न व राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी स्कूल संगीत शिक्षक तुलसीदास सिंह ने भजन प्रस्तुत किये। आर्य समाज प्रधान श्री अर्जुन देव चढ्डा, सर्वोदय एजुकेशनल ग्रुप चेयरमैन ए.जी. मिर्जा एवं प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने अपने-अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन श्री अरविन्द पाण्डेय व प्रद्युम्न शर्मा ने किया।

-अर्जुन देव चढ्डा, प्रधान

शोक समचार

श्रीमती तृप्ता शर्मा जी को मातृ शोक

आर्य समाज हनुमान रोड की सदस्या एवं आर्य विद्या परिषद की कर्मठ कार्यकर्ता, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती तृप्ता शर्मा जी की पूज्य माताजी एवं स्वतंत्रता सेनानी व सभा के पूर्व पत्र आर्य गजट के सम्पादक स्व.श्री दुर्गा दास जी की धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी का 23 सितम्बर को 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। जिनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि के साथ दिनांक 24 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 सितम्बर को आर्य समाज हनुमान रोड पर हुई जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सहित विभिन्न समाजों के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पं. श्री शशिकान्त शास्त्री का निधन

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के धर्माचार्य श्री शशिकान्त शास्त्री जी का दिनांक 20 सितम्बर, 2017 को हस्पताल में ब्रेन हैमरेज होने से निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 25 सितम्बर, 2017 से रविवार 1 अक्तूबर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28–29 सितम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 27 सितम्बर, 2017

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

आर्य सभा मॉरीशस के तत्त्वावधान में दिनांक 21, 22, 23 नवम्बर 2017 को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन आर्य भवन, पोर्ट लुई में सम्पन्न होगा। सक्रिय रूप से भाग लेने वाले सभी सदस्य-सदस्याएं शीघ्रातिशीघ्र अपना सहयोग निम्न प्रकार प्रदान करने की कृपा करें, ताकि यह सम्मेलन पूर्ण रूपेण सफल हो :-

(1) आर्थिक द्वारा, (2) आलेख भेजकर (3) अपनी उपस्थिति द्वारा

आलेख का मुख्य विषय : **'नारी का उत्तरदायित्व'**। सहायक विषय हैं :- 1. वेदों में नारी का अधिकार, 2. नारी शिक्षा और संतान-निर्माण, 3 धर्म, संस्कृति और भाषा की रक्षा में नारी की भूमिका। पूर्ण लेख प्रस्तुत करने का निधारित समय : 10 मिनट। आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 21 अक्टूबर 2017। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- **1. श्रीमती यालिनी रघु - 57712073, 2. श्रीमती लीलामणि करीमन - 57879210, 3.आर्य सभा मॉरीशस - 2122730/2087504**

प्रतिष्ठा में,

वैदिक पुस्तकालय हेतु पुस्तकें दान दें

सभी आर्य भद्र महापुरुषों और माताओं-बहनों को सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विशेष व विशाल पुस्तकालय निर्माण की तैयारी आरम्भ की जा चुकी है। यह पुस्तकालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। इस पुस्तकालय में सम्पूर्ण वैदिक वामय ''ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण साहित्य के सभी संस्करण, ऋषि दयानन्द और अन्य सभी आर्य महापुरुषों के जीवन-चरित्र, राष्ट्रीय एवं आर्य समाज विषयक ऐतिहासिक पुस्तकें, विभिन्न मत-सम्प्रदायों से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में साहित्य का संग्रह एक ही पुस्तकालय में उपलब्ध करवाने का प्रयास है। प्राचीन और नवीन हर तरह की पुस्तकें इस पुस्तकालय में संग्रहीत होगी। इस पुस्तक संग्रहालय में साहित्य को सुरक्षित करने की भी विशेष योजना है।

नोट : यदि आपके पास ऐसी कोई विशेष पुस्तकें हो जो वर्तमान समय में अप्राप्त है तो आप ऐसी पुस्तकें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को पुस्तकालय हेतु दान दे सकते हैं। **दानदाता कृपया सम्पर्क करें**

- आचार्य दिनेश शास्त्री मो. 7597454681, 7737904950

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल

20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें।

आप अपने कार्यक्रमों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

महापर्व विजय दशमी का सन्देश

- पं. नन्दलाल निर्भय

पर्व विजय दशमी आया है, मिलकर इसे मनाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।

आर्य जाति का महापर्व है, क्षत्रिय पर्व कहाता है।
आर्यावर्त्त से विमल पर्व का, आदिकाल से नाता है।।
सच्चे देशभक्त बन जाओ, सबको पाठ पढ़ाता है।
मदद करो निबलों-विकलों की, हमको सबक सिखाता है।।

राम-कृष्ण-विक्रम बन जाओ, स्वर्ग धरा पर लाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।
मानव तन अनमोल दोस्तो! शुभ कर्मों से पाया है।
सुर-दुर्लभ है मानव चोला, वेदों में दर्शाया है।।

ऋषियों-मुनियों, विद्वानों ने-इसको श्रेष्ठ बताया है।
लेकिन हमने मूर्खता से, जीवन व्यर्थ गंवाया है।।
जगदीश्वर की आज्ञा पालो, भले काम कर जाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।

जो वैदिक पथ पर चलता है, जिसका प्रभु से नाता है।
ईश्वर भक्त सदाचारीजन, जग में आदर पाता है।।
ऋषियों-मुनियों का जो सेवक, मानव वही कहाता है।
दानव दल का नाश करे जो, उसका जग यश गाता है।।

चन्द्रगुप्त, प्रताप, शिवा से, वीर बनो, यश पाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।
आपा-धापी मची हुई है, दु:खी विश्व अब सारा है।
मानवता अब सिसक रही है, रहा न भाईचारा है।।

उग्रवाद-आतंकवाद, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
रावण और कंस की महिमा, हर नेता अब गाता है।
ऋषियों के वंशजों! उठो तुम, पापाचार मिटाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।

अब भी अगर नहीं जागोगे, याद रखो, पछताओगे।
कायर क्रूर कमीने जग में, तुम सब माने जाओगे।।
अगर शान से जीना है तो, कर्मक्षेत्र में बढ़ जाओ।
कहने का अब समय नहीं है, काम करो आगे आओ।।

'नन्दलाल निर्भय' जागो, दुनिया में धूम मचाओ रे।
धीर-वीर बलवान बनो तुम, जग में नाम कमाओ रे।।

- ग्राम - बहीन, पलवल (हरि.) मो. : 9813845774

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह